भोजपुरी सिनेमा : वर्तमान और भविष्य

- डॉ. अंगदकुमार सिंह

शोधपत्र सार :

सिनेमा का प्रभाव लोगों पर जादू की तरह होता है | भोजपुरी माटी से लगाव के कारण नज़ीर हुसैन ने पहली भोजपुरी फिल्म 'गंगा मईया तोहे पियारी चढ़इबो' की पटकथा लिखी तो कोयला व्यासायी और सिनेमा हॉल के मालिक विश्वनाथप्रसाद 'शाहाबादी' ने इस फ़िल्म में पैसा लगाया तथा नज़ीर ने इस फ़िल्म को निर्देशित करने की ज़िम्मेदारी कुन्दन शाह को सौंपी| भोजपुरी सिनेमा का क्षेत्र मुख्यरूप से बिहार है, इसके अलावा यह उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र तथा नेपाल के तराई और मधेश क्षेत्र में भी अच्छा व्यवसाय करता है| भोजपुरी की अब तक सर्वाधिक कमाई करने वाली फ़िल्मों में 'ससुरा बड़ा पैसा वाला' की गणना की जाती है, जो अजय सिन्हा द्वारा निर्देशित और मनोज तिवारी एवं रानी चटर्जी द्वारा अभिनीत है। वर्तमान समय में भोजपुरी सिनेमा का कारोबार करीब 2000 करोड़ रुपये तक पहुँच गया है| भोजपुरी फ़िल्म अधिकत: श्रोता-दर्शकों की तालियों से स्वागत प्राप्त करती है, सम्मान और स्वीकृति भी| स्वाभाविकता और आत्मीयता तथा सामाजिक मनोविज्ञान की यथार्थिक प्रतिमा गढ़ना भोजपुरी फ़िल्मों की निजी हैसियत और ताक़त होती है|

बीजशब्द :

भोजपुरी सिनेमा, फ़िल्मोद्योग, फ़िल्म, कथा, संवाद, अभिनय, फ़ोटोग्राफ़ी, संगीत, नृत्य |

भूमिका :

यह किसे पता था कि जो भोजपुरी राजाश्रित सैनिकों द्वारा मुर्गी पकड़कर उससे कहने के क्रम में उत्पन्न हुई वह आगे चलकर इतने विस्तृत भूभाग में फैलकर अपनी मधुर मिठास से लोगों को आकर्षित कर प्रभावित करेगी| लेकिन सरकार की अनिच्छा और अलसायी दृष्टि ने भोजपुरी बोलने और समझनेवालों की इतनी बड़ी संख्या होने के बावजूद अबतक न तो सरकारी मुहर लगा पायी और न आठवीं अनुसूची में शामिल ही, फिर भी यह अपने दम पर इतना बड़ा फिल्मोद्योग खड़ाकर लोगों को बारोज़गार करने का काम कर रही है| आज़ादी के पश्चात हमारे समाज और देश में अनेक परिवर्तन हुए तो भोजपुरी सिनेमा भी अपने आपको इससे दूर नहीं रख पाया इसलिए उसने भी अनेक स्तर पर बदलाव किये| स्वातन्त्र्योत्तर भारत में अनेक फिल्म-शिक्षण संस्थानों की स्थापना हुई और लोग व्यक्तिगत स्तर पर भी सिनेमा-जगत् को सँजाने-सँवारने में ख़ुद को लगाने लगे| फ़िल्म एक पूर्ण माध्यम है, जिसमें परम्परागत कला-रूपों के

साथ-साथ आधुनिक कलाओं का भी समावेश होता है| कथा, संवाद, अभिनय, फ़ोटोग्राफी, संगीत, नृत्य आदि कई विधाओं और कलाओं की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति इस माध्यम से सम्भव है| फ़िल्म अपेक्षाकृत एक नया माध्यम है जिसका आविर्भाव मूलरूप से विकसित कला के रूप में नहीं हुआ| धीरे-धीरे इसका विकास और परिमार्जन हुआ जैसे-जैसे इस दिशा में नये प्रयोग हुए| फ़िल्म निर्माण यान्त्रिक तथा सृजनात्मक आयामों का एक विलक्षण मिश्रण है|[1] सिनेमा को लेकर 'सत्यजीत रे' ने एक अर्थ-व्यंजक टिप्पणी की है जिसका सारांश छानकर कहा जा सकता है कि फ़िल्म एक चित्र है, फ़िल्म एक शब्द है, फ़िल्म एक आन्दोलन है, फ़िल्म एक नाटक है, फ़िल्म एक संगीत है, फ़िल्म एक कहानी है, फ़िल्म हज़ारों अभिव्यक्तिपूर्ण श्रव्य एवं दृश्य का मुकम्मल आख्यान है| डॉ. रोजर्स की दृष्टि में, "चलचित्र किसी क्रिया को उत्प्रेरित करने के लिए एक उत्तरोत्तर अनुक्रम में प्रक्षेपित छायाचित्रों की एक लम्बी शृंखला द्वारा विचारों के सम्प्रेषण का एक माध्यम है|"

साहित्य-समीक्षा :

नयी, उन्नत और आकर्षक कला को सिनेमा कहा जाता है| सिनेमा का प्रभाव लोगों पर जादू की तरह होता है| तब यह कैसे हो सकता है कि कोई भाषा इस जादुई प्रभाव से अपने को दूर रख सके? भोजपुरी भी अपने को इस जादुई चमत्कार से अलग नहीं कर सकी| रविराज पटेल ने प्रभात प्रकाशन से 2016 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'भोजपुरी फ़िल्मों का सफ़रनामा' में लिखा है कि, "1932 में बनी दूसरी बोलती फ़िल्म 'इन्दरसभा' में दो भोजपुरी गानों से रजत पर्दे पर भोजपुरी भाषा का जो सफ़र शुरू होता है वो 1943 में महबूब खान की फ़िल्म 'तक़दीर' में गायी गयी एक ठुमरी- 'बाबू दारोगा जी कौने कसूर पर धर लियो सैंया मोर ..' से भोजपुरी फ़िल्म को ज़मीन पर उतारने का ख्वाब, जद्दनबाई (नरगिस की मां) की आँखों में जागता है, मगर कसक अधूरी रह जाती है|" आगे चलकर भारतीय गणराज्य के प्रथम नागरिक और राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने भोजपुरी भाषी होने का परिचय देते हुए एक सराहनीय क़दम उठाया और एक फ़िल्म समारोह के अवसर पर उन्होंने भोजपुरी सिनेमा की दिशा में काम करने के लिए फ़िल्मकारों से कहा| दरअसल, उन दिनों अर्थात् साठ के दशक में भोजपुरी फ़िल्में बनती नहीं थीं, मगर भोजपुरी भाषी लोग हिन्दी सिनेमा में काम करते थे| ऐसे में हिन्दी सिनेमा में कभी-कभी भोजपुरी की छौंक लगा दी जाती थी तो उनमें मानो चार-चाँद लग जाता था| उस दिन समारोह में सिरकत करने वाले भोजपुरी माटी के निवासी नज़ीर हुसैन, राजेन्द्र प्रसाद जी की बात से काफ़ी प्रभावित हुए और उन्होंने राष्ट्रपति को भरोसा दिलाते हुए अपनी मातृभाषा में कहा कि, **"डॉक्टर साहब समझीं हम आजे से ई दिसा में काम करे सुरू कर देनीं, रउवा बस सुभकामना दीं|"** भोजपुरी माटी से लगाव के कारण जब उन्होंने पहली भोजपुरी फिल्म 'गंगा मईया तोहे पियारी चढ़इबो' की पटकथा लिखी और फ़िल्म बनाने के लिए बिमल रॉय के पास गये तो श्री

रॉय को कहानी तो अधिक पसन्द आयी, पर वो इसे हिन्दीभाषा में बनाना चाहते थे जो नज़ीर साहब को अच्छा नहीं लगा| वे भोजपुरी में बुने सपने और राजेन्द्र बाबू को दिये अपने आश्वासन को हिन्दी के यथार्थ में ढालना नहीं चाहते थे इसलिए उन्होंने बिमल रॉय के ऑफर को ठुकरा दिया| बिमल रॉय के ऑफर को ठोकर मारने के बाद नज़ीर लम्बे समय तक निर्माता की तलाश में भटकते रहे और उन्होंने ठान लिया कि वो भोजपुरी की पहली फ़िल्म बनाकर ही दम लेंगे| नज़ीर अपने साथी और सहयोगियों से कहते फ़िरते थे कि **'फिलिमिया चाहें जहिआ बनो, बाकी बनी त भोजपुरिया में'** नज़ीर की तलाश जारी रही और बम्बई का कोई निर्माता नहीं मिला जो भोजपुरी पर पैसा लगाये| अन्त में कोयला व्यासायी और सिनेमा हॉल के मालिक विश्वनाथप्रसाद 'शाहाबादी' ने इस फ़िल्म में पैसा लगाने के लिए तैयार हुए तथा नज़ीर ने निर्देशन की कमान बनारस के रहने वाले कुन्दन शाह को सौंपी| बनारस के कुमकुम और असीम ने इस फ़िल्म में प्रमुख भूमिका का निर्वाह किया| फ़िल्म के लिए 01 लाख 50 हजार का बजट तय हुआ, लेकिन फ़िल्म बनते-बनते यह आँकड़ा 5 लाख को छू गया| मगर, शाहाबादी ने पैसे की फ़ीक्र नहीं की और फ़िल्म को पूरा किया तथा 1963 में भोजपुरी की पहली फ़िल्म रिलीज हुई| उस दौर में इस फ़िल्म ने 80 लाख की कमायी करके कीर्तिमान स्थापित किया|

1970 तक आते-आते भोजपुरी सिनेमा का यह सफ़र धीमा पड़ जाता गया, जैसे थोड़ा रुक कर आगे के सफ़र की तैयारी कर रहा हो और कुछ साल बाद फ़िल्म "दंगल" से भोजपुरी सिनेमा रंगीन होकर हमारे सामने आया| इसी दौर में 'गंगा किनारे मोरा गाँव' फ़िल्म आयी और पूरे भारत में धूम मचा दी| परन्तु, अफ़सोस कि 'गंगा मइया तोहे पियरी चढईबो', 'हँसी-हँसी पनवा खिऔले बेईमनवा' जैसे मन को छू जाने वाले गानों के साथ शुरू होने वाला भोजपुरी सिनेमा आज कैसे नारी तन के एक-एक हिस्से को परिभाषित कर रहा है | सरकार की उपेक्षा और वितरकों के नैक्सस (बन्धन) का शिकार भोजपुरी सिनेमा को इन्तजार है नज़ीर हुसैन जैसे सच्चे, ईमानदार और प्रतिभाशाली फ़िल्मकार का, जो भोजपुरी सिनेमा को फ़िर से भोजपुरी इलाके की सच्चाईयों, उसके दु:ख, तकलीफ़, हर्ष-उल्लास और माटी की सोंधी खुशबू से जोड़ सके| (रविराज पटेल, प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2016)

भोजपुरी भाषा में 1980 के दशक में पुन: सिनेमा का निर्माण शुरू हुआ और सन् 1982 में हिन्दी एवम् भोजपुरी के युगल भाषारूप में बनी तथा गोविन्द मनीष द्वारा निर्देशित फ़िल्म 'नदिया के पार' ब्लॉकबस्टर फ़िल्म रही। परन्तु, सन् 1983 में कल्पतरु द्वारा निर्देशित 'हमार भौजी' फ़िल्म बॉक्स ऑफिस पर छिटपुट सफलता पायी| राजकुमार शर्मा द्वारा निर्देशित 'माई' 1989 में आयी| सन् 1990 से 2000 तक का समय भोजपुरी फ़िल्मोद्योग के लिए प्रतिकूल साबित हुआ और यह व्यवसाय अपनी साँसें गिनने पर मज़बूर हो गया था। भोजपुरी सिनेमा का सफ़र पुन: सन् 2001 में मोहन प्रसाद द्वारा निर्देशित फिल्म 'मेरी स्वीटहार्ट' से शुरू हुआ

जिसमें नायक रवि किशन ने सुपरस्टारडम में गोली मार दी| इसके साथ ही कई सफल भोजपुरी फिल्में यथा- 'पण्डित जी बताई ना बियाह कब होई' आदि आयी तो सन् 2005 में अनेक फ़िल्में जैसे- 'मुझे जब शादी करनी होगी', 'ससुरा बड़ा पैसा वाला', 'मेरे पास अमीर आदमी' आदि आयीं | नयी फ़िल्में भोजपुरी फिल्मोद्योग में बॉलीवुड की मुख्यधारा की फ़िल्मों की अपेक्षा बिहार और उत्तर प्रदेश में बेहतर कारोबार किया।

भोजपुरी सिनेमा का क्षेत्र मुख्यरूप से बिहार है, इसके अलावा यह उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र तथा नेपाल के तराई और मधेश क्षेत्र में भी अच्छा व्यवसाय करता है| भोजपुरी की अब तक सर्वाधिक कमाई करने वाली फ़िल्मों में 'ससुरा बड़ा पैसा वाला' की गणना की जाती है, जो अजय सिन्हा द्वारा निर्देशित और मनोज तिवारी एवं रानी चटर्जी द्वारा अभिनीत है। भोजपुरी सिनेमा में शताब्दी के महानायक और बॉलीवुड के महान अभिनेता अमिताभ बच्चन ने 'गंगा' फ़िल्म में अभिनय किये जो 2006 में सिनेमा घरों में प्रदर्शित हुई इसके साथ ही मिथुन चक्रवर्ती ने भी भोजपुरी भाषा के महत्व को समझा तथा 'भोले शंकर' फ़िल्म में काम किया जो उनकी इस भाषा की पहली फ़िल्म थी तथा 2008 में रिलीज़ हुई।

2010 से 2018 के मध्य आयी प्रमुख भोजपुरी फ़िल्म हैं- 'देवरा बड़ा सतावेला', 'देसवा', 'एलान', 'रखवाला', 'देवरा भइल दीवाना', 'निरहुआ हिन्दुस्तानी', 'दुलारा', 'दुल्हन चाही पाकिस्तान से', 'मेहन्दी लगा के रखना', 'धड़कन', 'तबादला', 'सरकार राज', 'सत्य', 'निरहुआ हिन्दुस्तानी 2', 'मैं सेहरा बाँध के आऊँगा', 'मुकद्दर', 'मेहन्दी लगा के रखना 2', 'दुल्हन गंगा पार के', 'माँ तुझे सलाम', 'संघर्ष', 'दबंग सरकार', 'नागराज', 'डमरू', 'दुल्हन चाही पाकिस्तान से 2', 'सनकी दरोगा', 'बलम जी लव यू', 'इण्डियन विराज 1', 'नागदेव 2', 'निरहुआ चलल लन्दन' 'करम', 'वाण्टेड', 'आवारा बलम', 'बॉर्डर', 'संघर्ष', 'राजा जानी', 'बैरी कंगना 2', 'घूँघट में घोटला', 'माई रे माई हमका उहे लइकी चाही', 'चना जोर गरम', 'नागराज' 'गैंगस्टर', 'दुल्हनिया', 'मुन्ना मवाली', 'लोहा' आदि|

2019 में भोजपुरी भाषा में अनेक सिनेमा का निर्माण हुआ जो अच्छा व्यवसाय भी किया, जैसे- 'लगल रहा बताशा', 'मन्दिर वही बनाएँगे', 'शेर-ए-हिन्दुस्तान', 'क्रैक फाइटर', 'विशेष मुठभेड़', 'दहेज दानवी', 'सइयाँ जी', 'दगाबाज़', 'कुली नम्बर 1', 'राजा', 'मैंने उनको सजन चुन लिया', 'जय वीरू', 'काशी विश्वनाथ', 'रानी वेड्स राजा', 'पत्थर के सनम', 'राजतिलक', 'जय हिन्द', 'नायकी', 'गुण्डा', 'लल्लू की लैला', 'बागी-एक योद्धा', 'शेर सिंह', 'मेरी जंग मेरा फैसला' 'सबसे बड़ा चैंपियन' आदि तो 2020 में 'सातो जनम', 'वीर अर्जुन', 'लैला मजनू', 'मुकद्दर का सिकन्दर', 'एक साजिस जली', 'मेन्हदी लगा के रखना 3', 'पवन पुत्र' आदि फ़िल्में रिलीज़ हुईं|

2021 में 'दुल्हन वही जो पिया मन भाये', 'विनाशक', 'घातक', 'प्रेमगीत', 'प्यार तो होना ही था', 'सीता और गीता', 'शुभ विवाह', 'सैंया अरब गइल ना', 'रोमियो', 'राजा', 'बंसी बिरजू' आदि फ़िल्में आयी तो 2022 में 'आशिक़ी', 'शादी हो तो ऐसी', ससुरा बड़ा सतावेला', 'दुल्हनिया लन्दन से लायेंगे', 'लव विवाह डाट काम', 'मेरा भारत महान', 'लाडो', 'सौदागर', 'नरसिम्हा', 'शिवा का शौर्य', 'उमस', 'पेपर ब्वाय', 'मुझे कुछ कहना है', 'राउडी इंस्पेक्टर', 'डोली सजा के रखना', 'सजन', 'नाच बिरजु नाच', 'ड्रामा', 'बोल राधा बोल', 'हमार स्वाभिमान', 'एक छैला छह लैला', 'जीना तेरी गली में', 'राजा की आयेगी बारात', 'मेण्टल आशिक', 'रावडी राकी' आदि फ़िल्म |

2023 में 'सबका बाप अँगूठा छाप', 'राजा डोली लेके आजा', 'दाग एगो लांछन', 'फरिश्ता', 'नाम बदनाम', 'इश्क', 'नमक हराम', 'माई', 'खिलाड़ी', 'डार्लिंग' 'पापा मैं बड़ी हो गयी', 'तू तू मैं मैं', 'सनक', लाडला 2', 'हर हर गंगे', 'छत क बरतिया' आदि भोजपुरी सिनेमा ने बेहतर प्रदर्शन से दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित कर अच्छा व्यवसाय किया तो 2024 में 'आशिक़ी', 'बलमा बिहार वाला 3', 'मैं तेरे इश्क में', 'अनपढ़', 'कलेक्टर बिटिया', 'अफसर बिटिया', 'लन्दन में लफड़ा', 'सौतेली बहन', 'पवन की जंग' आदि सिनेमा भी|

भोजपुरी सिनेमा के अभिनेताओं में कृष्णा अभिषेक, विनय आनन्द, बिराज भट्ट, मनोज भावुकी, के. के. गोस्वामी, नज़ीर हुसैन, गौरव झा, क्रांतिप्रकाश झा, कमाल आर खान, सिकन्दर खरबन्द, रवि किशन, रितेश पाण्डेय, ऋषभ कश्यप, कुलदीप कुमार, सुजीत कुमार, यश कुमार, अवधेश मिश्रा, प्रदीप पाण्डेय, राकेश पाण्डेय, संजय पाण्डेय, पवन सिंह, दिलीप सिन्हा, मनोज टाइगर, मनोज तिवारी, दिनेशलाल यादव, खेसारीलाल यादव, अरविन्द अकेला 'कल्लू', प्रवेशलाल यादव, प्रमोदप्रेमी यादव, आदित्य ओझा, अखिलेश कुमार, सुनील सागर, राहुल देव, विनोद यादव, सिकन्दर खान, सावन्तराजू सिंह माही, कृतन अजितेश, मीर सरवर, रजनीश मिश्रा, समर सिंह, मिठाईलाल यादव, सोनू खत्री, प्रमोद शास्त्री, सुशीलकुमार उपाध्याय, आनन्द सिंह, प्रेमांशु सिंह, मनोज नारायण, चिण्टू पाण्डेय, यश कुमार, प्रिंस सिंह 'राजपूत', शिवकान्ति मणि, राजू सिंह, विशाल सिंह, हीरा यादव, वासुदेव पासवान, विनोद मिश्र, समर्थ चतुर्वेदी आदि हैं तो अभिनेत्रियों में आम्रपाली दुबे, काजल राघवानी, अन्तरा विश्वास (मोनालिसा), अक्षरा सिंह, निशा दुबे, आकांक्षा अवस्थी, पाखी हेगड़े, निधि झा, सीमा सिंह, रानी चटर्जी, मणि भट्टाचार्य, स्मृति सिन्हा, अंजना सिंह, काव्या सिंह, राखी त्रिपाठी, प्रियंका पण्डित, पूनम दुबे, अनारा गुप्ता, गुंजन पन्त, याशिका कपूर, मधु शर्मा, शुभी शर्मा, ऋचा दीक्षित, नेहाश्री, ऋतु सिंह, सीमा सिंह, कल्पना शाह, प्रीति विश्वास, यामिनी सिंह, मुनमुन घोष, पावनीकनक पाण्डेय, संचिता बनर्जी, पयशी पण्डित, सहार अफशा, टीनू वर्मा, काजल यादव, चाँदनी सिंह, पूजा गाँगुली, मेघाश्री, जोया खान, रीतू सिंह, तनुश्री चटर्जी, कीर्ति यादव, श्रुति राव इत्यादि|

कर्नाटक के मणिपाल में जन्मी और मुम्बई में पली-बढ़ी पाखी हेगड़े ने भोजपुरी के अलावा मराठी, पंजाबी और हिन्दी सिनेमा में भी अभिनय किया है। वर्ष 2004 में दूरदर्शन पर प्रसारित सीरियल 'मैं बनूँगी मिस इण्डिया' से कॅरियर की शुरुआत करने वाली पाखी दो वर्ष बाद ही भोजपुरी फ़िल्मों से जुड़ गयीं। अब तक वह 45 से अधिक भोजपुरी फ़िल्मों में लीड रोल कर चुकी हैं। अभिनय को साधना मानने वाली पाखी बिग बी अमिताभ बच्चन, जया बच्चन, गुलशन ग्रोवर आदि के साथ काम कर चुकी हैं। उनका मानना है कि, "33 करोड़ लोगों की ओर से पसन्द की जाने वाली भोजपुरी फ़िल्मों का भविष्य भी तमिल, तेलुगू फ़िल्मों की तरह उज्ज्वल है। बोलीं, सफलता का कोई शार्टकट नहीं होता। कड़ी मेहनत के बाद ही इस क्षेत्र में कामयाबी मिलती है।"[2] आम्रपाली दुबे ने हॉरर फिल्म 'पूर्वा' के प्रमोशन के अवसर पर जौनपुर में 01 फरवरी, 2021 को पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि, "प्रदेश में जिस तरह से भोजपुरी फ़िल्म के प्रति लोगों का प्यार बढ़ा है उससे हम लोगों का हौसला बढ़ रहा है और सरकार भी मदद कर रही है ऐसे में भोजपुरी फ़िल्म इण्डस्ट्री का भविष्य बहुत ही सुन्दर है ।" भोजपुरी सिनेमा का मूल्यांकन करते हुए पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान के निदेशक और पूर्वांचल हिन्दी मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष व श्रव्य-दृश्य माध्यम के विश्लेषक आचार्य डॉ. रामदरश राय ने कहा कि, "दृश्यकला-माध्यमों में रूपक के समानान्तर चलचित्र ने सहृदय भावक को अधिक प्रभावित किया है| कदाचित् सिनेमा ने रंगमंच को भी पीछे छोड़ दिया है| भाषायी सिनेमा-जगत् में अंग्रेज़ी सिनेमा का आरम्भत: वर्चस्व बना परन्तु, उसके प्रभाव और प्रकाश को हिन्दी ने रोक दिया| विस्मयकारी, किन्तु हक़ीकत है कि भोजपुरी सिनेमा ने अतीत के शृंगारिक फूहड़पन से निकलकर वर्तमान को मज़बूत पीठिका प्रदान की है| भोजपुरी सिनेमा ने भारतीय 'वालीवुड' के समानान्तर 'भोजीवुड' की छाया-प्रतिमा बनकर अन्तरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा भी अर्जित की है| भोजपुरी के अनेक चलचित्रक परिदृश्य सिनेमा-प्रेमियों के सामने से गुज़रे हैं जो मील का पत्थर या कि इतिहास के कालजयी चिह्न बन उठे हैं| 'गंगा मईया तोहे पियारी चढ़इबो', 'गंगा किनारे मोरा गाँव', 'नदिया के पार', 'ससुर बड़ा पैसा वाला', 'कलेक्टर बिटिया' आदि जैसे भोजपुरी चलचित्र अंग्रेज़ी, संस्कृत, हिन्दी, मराठी, कन्नड़ और तेलुगु आदि उल्लेखनीय भाषाई फ़िल्मों से अधिक रंजक, प्रेरक और प्रभावशाली हैं|"[3]

मौजूदा वक्त में भोजपुरी सिनेमा का कारोबार करीब 2000 करोड़ रुपये का हो गया है, लेकिन साल 1999 से 2000 के दौरान यह ख़त्म होने के कगार पर था| ऐसे में साल 2002 में बनी फ़िल्म 'सइयाँ हमार' ने बढ़िया कारोबार किया और भोजपुरी जगत् के निर्माताओं और निर्देशकों के बीच फिर से उम्मीद की एक किरण जगी| मगर, इस बार भोजपुरी सिनेमा अश्लीलता की चासनी में डूब गया| मनोज तिवारी की फ़िल्म 'ससुरा बड़ा पैसा वाला' की

सफलता को देख भोजपुरी निर्माताओं ने कण्टेट (कथावृत्त) को निचले स्तर पहुँचा दिया और दर्शकों को कुछ भी परोसने की रेस में शामिल हो गये|

एक समय 'गवनवा लईजा राजा जी' जैसे गानों ने भोजपुरी फ़िल्मों में चार चाँद लगा दिये थे, लेकिन यह सइयाँ, साली, लहंगा, रिमोट, जवानी, चुम्मा से आगे नहीं बढ़ पाया| यह सच है कि भोजपुरी में बनने वाली बहुत सी फ़िल्मों को भारतीय केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड द्वारा 'A' (वयस्कों वाला) प्रमाण पत्र दिया गया है|

निष्कर्ष :

समग्रत: कभी सिर्फ़ एक क्षेत्र में बोली जाने वाली भोजपुरी भाषा अब पूरे देश में ही नहीं विश्व के अनेक देशों में अपना जलवा बिखेर रही है| सोशल मीडिया से लेकर सिनेमाई पर्दे तक इसकी धूम मची हुई है लेकिन वर्तमान समय में भोजपुरी सिनेमा की चर्चा के साथ ही एक शब्द जुड़ता है- 'अश्लीलता'| इसमें कोई संशय नहीं कि वर्तमान समय में भोजपुरी फ़िल्म-जगत् के कण्टेट (कथावृत्त) पर कई प्रश्न उठते हैं, लेकिन मौजूदा दौर के निर्माता और निर्देशकों ने भोजपुरी सिनेमा के इतिहास को शायद भुला दिया है| इस फ़िल्मोद्योग को खड़ा करने और यहाँ तक लाने वाली हस्तियों के संघर्ष से आज का भोजपुरी सिनेमा अवगत नहीं है| तभी तो हर दिन भोजपुरी फिल्मों में अश्लिल शब्दों की बाढ़ आ जा रही है और दर्शक भी बड़े चाव से देख-सुन रहे हैं| भोजपुरी सिनेमा में काम करने वाले लोगों को नज़ीर हुसैन के संघर्ष को जानने की ज़रूरत है, जिन्होंने बिमल रॉय से भाषा-बोली का समझौता नहीं किया और भोजपुरी इतिहास की पहली फ़िल्म 'गंगा मईया तोहे पियरी चढ़इबो' बनायी, जो उत्तर प्रदेश और बिहार की सीमा से सटे गाज़ीपुर के निवासी थे तथा बिमल रॉय की फ़िल्म 'दो बीघा जमीन' के लेखक भी| यदि भोजपुरी सिनेमा के निर्माता नज़ीर हुसैन से प्रेरणा लेकर और अच्छे कण्टेण्ट (कथावृत्त) के साथ फ़िल्म बनाये तो भोजपुरी फ़िल्म भारत ही नहीं विश्व के कोने-कोने में पहुँच जायेगी| प्रमाण के तौर पर किसी नगर या महानगर अथवा ग्रामीण परिप्रेक्ष्य के किसी सिनेमा हाल में भोजपुरी फ़िल्म लगी हो तो उसके दर्शक और श्रोता अपेक्षाकृत अन्य भाषाभाषी के अनुपात में दो गुने-तीन गुने होते हैं| कई बार तो रोचक, व्यंजक और स्वाभाविक भोजपुरी फ़िल्मों के समक्ष हिन्दी और अंग्रेज़ी फ़िल्म अपने माथे पर चिन्ता के पसीने पोछते नज़र आते हैं| हूट करना, सिटीबजाना या कि क्षण-प्रतिक्षण तालियाँ बजाकर अपने दर्शक-भाव का प्रकटन तो मानवमन का स्वभाव है| यही मूल्याँकन का असली तराज़ू भी है| इस दृष्टि से (आपवादिक फ़िल्मों को छोड़कर) भोजपुरी फ़िल्म अधिकत: श्रोता-दर्शकों की तालियों से स्वागत प्राप्त करती है, सम्मान और स्वीकृति भी| स्वाभाविकता और आत्मीयता तथा सामाजिक मनोविज्ञान की यथार्थिक प्रतिमा गढ़ना भोजपुरी फ़िल्मों की निजी हैसियत और ताकत होती है|

सन्दर्भ :

1. फ़िल्म पत्रकारिता (सं. अर्जुन तिवारी), यू.पी.आर.टी.ओ.यू., इलाहाबाद, 2017, पृष्ठ 6

2. साक्षात्कार : अमर उजाला, इलाहाबाद संस्करण, 21 फरवरी, 2016

3. साक्षात्कार : प्रो. रामदरश राय का युवा पत्रकार और डॉ. अंगदकुमार सिंह द्वारा, 14 नवम्बर, 2024

डॉ. अंगदकुमार सिंह, असिस्टेण्ट प्रोफेसर: हिन्दी
जवाहरलाल नेहरू पी.जी. कॉलेज, बाँसगाँव, गोरखपुर (उ.प्र.), भारत - 273403
मो.नं.: 7460856206, ई-मेल: anagadkumarsingh01@gmail.com